तुम्बुलूराचार्य

जीवन-परिचय : तुम्बुलूराचार्य के समय के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक परिचय नहीं मिलता है। प्रतीत होता है कि ये तुम्बुलूर नामक नगर के निवासी थे, अतः तुम्बुलूराचार्य कहलाए।

डॉ. हीरालाल जी ने धवला के प्रथम भाग की प्रस्तावना में इनका समय चौथी शताब्दी बतलाया है।

तुम्बुलूराचार्य ने षट्खंडागम के प्रथम पाँच खंडों पर 'चूडामणि' नाम की एक टीका लिखी थी, जिसका प्रमाण 84,000 श्लोक प्रमाण बतलाया है। छठवें खंड को छोड़कर दोनों सिद्धान्तग्रन्थों पर एक महत्त्वपूर्ण व्याख्या कन्नड़ी भाषा में बनाई थी। इनके अतिरिक्त छठवें खंड पर 7,000 श्लोक प्रमाण टीका 'पंजिका' लिखी। इन दोनों रचनाओं का प्रमाण 91,000 श्लोक प्रमाण हो जाता है।

महाधवला का जो परिचय धवलादि सिद्धान्तग्रन्थों के 'प्रशस्ति-संग्रह' में दिया गया है, उसमें इस टीका 'पंजिका' का उल्लेख भी मिलता है।

रचना-परिचय : आपके द्वारा रचित एक ही टीका प्राप्त होती है—

1. चूड़ामणि-टीका (षट्खंडागम-टीका)